

भारत के प्रमुख इकोटूरिज्म स्थल: प्रबंधन ढाँचा, नीतिगत पहल और पर्यटक अनुभव का विश्लेषण (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अनिल कुमार

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, बैबी हैप्पी मॉडर्न पीजी कॉलेज, हनुमानगढ़, राजस्थान

Email:- Anilsuthar245@gmail.com

1. सार

भारत में इकोटूरिज्म तेजी से बढ़ता हुआ पर्यटन क्षेत्र है, जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और स्थानीय समुदायों की आजीविका, दोनों से जुड़ा है। यह शोध-पत्र भारत के प्रमुख इकोटूरिज्म स्थलों (केरल, तमिलनाडु, गोवा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, लद्दाख और राजस्थान) का भौगोलिक परिचय देता है और उनके प्रबंधन ढाँचे तथा सरकारी पहलों की समीक्षा करता है। राजस्थान के उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर और रणथंभौर क्षेत्रों का विशेष विवरण दिया गया है। पर्यटक अनुभव को समझने के लिए पाँच राज्यों के छह स्थलों की लगभग 3,030 ऑनलाइन समीक्षाओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के अनुसार 74.3 प्रतिशत समीक्षाएँ सकारात्मक (उत्कृष्ट या बहुत अच्छा) और 9.8 प्रतिशत नकारात्मक (बुरा या बहुत बुरा) हैं। गोवा का दूधसागर जलप्रपात सर्वाधिक संतुष्टि (89.0%) वाला स्थल रहा, जबकि राजस्थान के स्थलों में सकारात्मक समीक्षा 63.2% और नकारात्मक 13.0% रही। अध्ययन से पता चलता है कि भारत में इकोटूरिज्म के लिए अलग, सुस्पष्ट कानूनी ढाँचा अभी विकसित नहीं हुआ है और स्थल-स्तर का प्रबंधन असमान है। पत्र के अंत में प्रबंधन सुधार के लिए सुझाव दिए गए हैं।

मुख्य शब्द: इकोटूरिज्म, पारिस्थितिक पर्यटन प्रबंधन, राजस्थान, वन्यजीव अभयारण्य, पर्यटक समीक्षाएँ, सतत पर्यटन

2. परिचय

इकोटूरिज्म वह पर्यटन है जिसमें प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्रा इस तरह की जाती है कि पर्यावरण का संरक्षण हो और स्थानीय लोगों को लाभ मिले। विकासशील देशों में इसे आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन का साधन माना जाता है। भारत में विविध भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं: रेगिस्तान, हिमालय, पश्चिमी घाट, समुद्र तट, आर्द्रभूमि और वन। इसी कारण यहाँ इकोटूरिज्म की संभावनाएँ बहुत अधिक हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इकोटूरिज्म भारत के सबसे लोकप्रिय और तेजी से बढ़ते पर्यटन रूपों में गिना जाने लगा है। इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठता है कि स्थलों का प्रबंधन कैसे किया जा रहा है, सरकार की क्या भूमिका है और पर्यटक इन स्थलों को किस रूप में देखते हैं। इस पत्र का केंद्र यही प्रश्न है।

3. शोध के उद्देश्य

1. भारत के प्रमुख इकोटूरिज्म स्थलों और उनकी विशेषताओं का क्षेत्रीय परिचय देना।

2. इकोटूरिज्म के प्रबंधन से जुड़ी केंद्र और राज्य स्तर की संस्थाओं, नीतियों और पहलों की समीक्षा करना।
3. राजस्थान के चयनित इकोटूरिज्म स्थलों का विशेष अध्ययन करना।
4. पर्यटक समीक्षाओं के आधार पर विभिन्न राज्यों के स्थलों में पर्यटक संतुष्टि की तुलना करना।
5. प्रबंधन की चुनौतियाँ पहचानकर सुझाव देना।

4. शोध विधि

यह अध्ययन वर्णनात्मक और तुलनात्मक है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध-पत्रों, मंत्रालयों और राज्य पर्यटन/वन निगमों की जानकारी का उपयोग किया गया है। पर्यटक अनुभव के विश्लेषण के लिए ट्रिप एडवाइज़र इंडिया पर उपलब्ध समीक्षाओं का सारणीकरण किया गया है। प्रत्येक स्थल की समीक्षाएँ पाँच श्रेणियों (उत्कृष्ट, बहुत अच्छा, औसत, बुरा, बहुत बुरा) में दर्ज थीं। विश्लेषण के लिए “उत्कृष्ट” और “बहुत अच्छा” को जोड़कर सकारात्मक हिस्सा तथा “बुरा” और “बहुत बुरा” को जोड़कर नकारात्मक हिस्सा निकाला गया है।

5. भारत में इकोटूरिज्म का प्रबंधन ढाँचा और नीतिगत पहल

5.1 केंद्र सरकार की संस्थाएँ

भारत में पर्यटन से जुड़े कानूनों, नीतियों और कार्यक्रमों की जिम्मेदारी पर्यटन मंत्रालय के पास है। मंत्रालय योजना और नीति-निर्माण, समन्वय, संसाधन जुटाने, उत्पाद विकास और विविधीकरण तथा क्षमता विकास जैसे कार्य करता है। इनमें उत्पाद विकास के स्तर पर सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना भी शामिल है। मंत्रालय ने इकोटूरिज्म के लिए वित्तीय सहायता कार्यक्रम चलाए हैं, जिनका उपयोग मुख्यतः बुनियादी ढाँचे और विपणन के लिए होता है। “अतिथि देवो भवः” अभियान ने भी इकोटूरिज्म को बढ़ावा देने में सामाजिक जागरूकता बढ़ाई है।

वन्यजीव और संरक्षित क्षेत्रों का प्रबंधन पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन है। वन्यजीव विंग, केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, भारतीय वन्यजीव संस्थान और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण जैसी संस्थाएँ संरक्षण को तकनीकी और प्रशासनिक सहयोग देती हैं। मंत्रालय की केंद्र प्रायोजित योजना राज्यों को वित्तीय और तकनीकी सहायता देती है। यह योजना तीन बिंदुओं पर केंद्रित है: संरक्षित क्षेत्रों के बाहर वन्यजीवों का संरक्षण, प्रजातियों और आवासों की पुनर्प्राप्ति, तथा संरक्षित क्षेत्रों का समर्थन।

5.2 कानूनी स्थिति

इकोटूरिज्म के लिए अभी कोई अलग और सख्त राष्ट्रीय कानून नहीं है। व्यवहार में दो कानून लागू होते हैं: वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 और वन संरक्षण अधिनियम, 1980। संरक्षित क्षेत्रों में मुख्य वन्यजीव वार्डन का आगंतुकों के नियमों पर सीधा नियंत्रण होता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इकोटूरिज्म के लिए स्पष्ट राष्ट्रीय दिशानिर्देशों की कमी इसके विकास में एक बड़ी बाधा मानी जाती है। सरकार नए दिशानिर्देश तैयार करने की प्रक्रिया में बताई गई है।

5.3 राज्य स्तर की पहल

- कर्नाटक: वर्ष 2013 में कर्नाटक इकोटूरिज्म विकास बोर्ड की स्थापना हुई। इसके उद्देश्यों में दिशानिर्देश, नीति, जागरूकता और शिक्षा का विकास, प्रकृति गाइडों का प्रशिक्षण, निजी और सार्वजनिक संचालकों के बीच तालमेल तथा वन क्षेत्रों में इकोटूरिज्म गतिविधियों की शृंखला को सुगम बनाना शामिल है।

- आंध्र प्रदेश: आंध्र प्रदेश वन विकास निगम घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के बीच ज़िम्मेदार यात्रा को बढ़ावा देता है। मारेडुमिली जैसे स्थलों का विकास स्थानीय आदिवासी समुदायों और वन विभाग के सहयोग से किया गया है।
- गोवा: गोवा पर्यटन विकास निगम दूधसागर, मसाला बागान और बारावलेम जैसे स्थलों को इको-ग्रीन गेटवे के रूप में विकसित करता है। राज्य के कुल भूमि क्षेत्र का 20% से अधिक हिस्सा वन्यजीव संरक्षण के अंतर्गत आता है।
- राजस्थान: राज्य ने राजस्थान इकोटूरिज्म नीति, 2021 शुरू की है। इसका उद्देश्य समुदाय-आधारित पर्यटन, संरक्षण और टिकाऊ अनुभवों को बढ़ावा देना है। देव सोमनाथ और सोरसन जैसे स्थलों को संभावित इकोटूरिज्म स्थल के रूप में पहचाना गया है।
- अन्य राज्य: उत्तर प्रदेश वन निगम विशेष इकोटूरिज्म पैकेज विकसित करने के लिए काम कर रहा है। उत्तर प्रदेश के कैमूर वन्यजीव प्रभाग में रॉक फ़ॉसिल्स के संरक्षण के लिए 2 करोड़ रुपये के निवेश की योजना का उल्लेख मिलता है। ओडिशा के गहिरमाथा तट पर ओलिव रिडले कछुओं के अंडे देने के समय पर्यटन गतिविधियों पर रोक लगाने पर विचार किया जा रहा है।

5.4 स्थानीय समुदाय और परामर्श व्यवस्था

राज्य स्तरीय इकोटूरिज्म रणनीतियों में स्थानीय समुदाय की भागीदारी, वन्यजीवों का पारिस्थितिक संरक्षण, इकोटूरिज्म गतिविधियों के प्रभाव की निरंतर निगरानी, शिक्षा और प्रशिक्षण तथा पर्यावरण-अनुकूल डिज़ाइन जैसे तत्व रखे गए हैं। स्थानीय सलाहकार समितियाँ संरक्षित क्षेत्रों से जुड़ी रणनीतियों की समीक्षा करती हैं और राज्य सरकार को सुझाव देती हैं। टूर ऑपरेटरों की गतिविधियों की निगरानी इसलिए की जाती है कि आगंतुकों के प्रवेश से वन्यजीवों को परेशानी न हो।

6. प्रमुख इकोटूरिज्म स्थल

6.1 दक्षिण और पश्चिम भारत

केरल: केरल के बैकवाटर देश के लोकप्रिय पारिस्थितिक पर्यटन स्थलों में गिने जाते हैं। थेनमाला को भारत का पहला नियोजित इकोटूरिज्म गंतव्य माना जाता है। एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान और साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान राज्य के प्रमुख संरक्षित क्षेत्र हैं। केरल ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में विपणन के पारंपरिक और आधुनिक, दोनों साधन अपनाए हैं।

तमिलनाडु: कोडईकनाल लगभग 2,130 मीटर की ऊँचाई पर स्थित हिल स्टेशन है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय ठंडी है, और बेरिजम झील, झरने तथा गुना गुफाएँ प्रमुख आकर्षण हैं।

गोवा: गोवा को समुद्र तटों और पार्टी संस्कृति के लिए अधिक जाना जाता है, पर यहाँ कई इको-गंतव्य भी हैं। दूधसागर जलप्रपात देश का दूसरा सबसे ऊँचा झरना माना जाता है। गलगीबागा (दक्षिण गोवा) टर्टल बीच के रूप में जाना जाता है। कोटिगाओ वन्यजीव अभयारण्य पक्षी-दर्शन के लिए उपयुक्त है।

आंध्र प्रदेश: टायडा (अराकू घाटी) और मारेडुमिली मुख्य इकोटूरिज्म स्थल हैं। मारेडुमिली में सदाबहार वन, जलधाराएँ और मदनीकुंज-विहार स्थल, कार्तिकवनम, नंदनवनम और वली सुग्रीव औषधीय पादप संरक्षण क्षेत्र जैसे आकर्षण हैं।

कर्नाटक: यहाँ बांदीपुर, नागरहोल और कबिनी जैसे वन्यजीव क्षेत्रों के साथ कावेरी नदी पर मछली पकड़ने के शिविर, तुंगा/नदी राफ्टिंग तथा मालपे, उडुपी और गोकर्ण जैसे समुद्र तट शामिल हैं। भद्रा वन्यजीव अभयारण्य पर्यटकों में लोकप्रिय है।

लदाख: त्सोमोरीरी आर्द्रभूमि संरक्षण रिजर्व समुद्र तल से लगभग 15,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और देश के विशिष्ट आवासों में गिना जाता है।

6.2 राजस्थान

राजस्थान में इकोटूरिज्म प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ टिकाऊ यात्रा पर केंद्रित है। वन्यजीव अभयारण्य, जंगल सफ़ारी, पक्षी-दर्शन और समुदाय-आधारित सांस्कृतिक अनुभव इसके मुख्य घटक हैं।

उदयपुर: यहाँ सज्जनगढ़ वन्यजीव अभयारण्य (मानसून पैलेस के निकट), जयसमंद वन्यजीव अभयारण्य (मानव निर्मित झील और पक्षी जीवन), फुलवारी की नाल वन्यजीव अभयारण्य (प्रवासी पक्षी गंतव्य) और कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य प्रमुख हैं। ट्रेकिंग, पक्षी-दर्शन, प्रकृति की सैर और स्थानीय मेलों-त्योहारों का अनुभव यहाँ की गतिविधियाँ हैं।

जैसलमेर: डेजर्ट नेशनल पार्क में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण), हिरण जैसे रेगिस्तानी वन्यजीव और ऊँट सफ़ारी का अनुभव मिलता है। आकाल वुड फ़ॉसिल पार्क में प्राचीन वृक्षों के जीवाश्म देखे जा सकते हैं, जो क्षेत्र के भूवैज्ञानिक इतिहास को दर्शाते हैं। प्रदूषण-रहित रेगिस्तानी आकाश के कारण तारा-निरीक्षण भी एक उभरती गतिविधि है। सोनार किला स्वयं इकोटूरिज्म स्थल नहीं है, पर मरुस्थल राष्ट्रीय उद्यान के निकट होने से क्षेत्र के पर्यटन आकर्षण में योगदान देता है।

जोधपुर: राव जोधा डेजर्ट रॉक पार्क मेहरानगढ़ किले के आसपास के प्राकृतिक आवास की बहाली के लिए बनाया गया है। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) का कृषि-पारिस्थितिकी-पर्यटन पार्क लगभग 8 हेक्टेयर में फैला है और इसमें शुष्क वनस्पतियों की लगभग 150 प्रजातियाँ हैं। कायलाना झील पक्षी-दर्शन के लिए उपयुक्त है। गुड़ा बिश्नोई गाँव में बिश्नोई समुदाय की प्रकृति-संरक्षण केंद्रित जीवनशैली को गाँव की सफ़ारी, काले हिरण और प्रवासी पक्षियों के दर्शन तथा स्थानीय कारीगरों से संवाद के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

रणथंभौर: यहाँ नियमित सफ़ारी, कचरा न फैलाने के सख्त नियमों और टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं के माध्यम से पर्यावरणीय प्रभाव कम करने पर जोर है। सफ़ारी वाहनों का नियमन होता है, पार्क को ज़ोन में बाँटा गया है, और गाइडों तथा ड्राइवों को वन्यजीव-अनुकूल व्यवहार का प्रशिक्षण दिया जाता है। ध्वनि प्रदूषण और जानवरों को परेशान करने वाली गतिविधियों पर रोक के नियम लागू हैं।

7. पर्यटक अनुभव का विश्लेषण

पर्यटक संतुष्टि समझने के लिए पाँच राज्यों के छह स्थलों की ट्रिप एडवाइजर इंडिया समीक्षाएँ (कुल 3,030) जुटाई गईं। राजस्थान की प्रविष्टि में रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य, जैसलमेर का डेजर्ट नेशनल पार्क, सोनार किला और वन्यजीव अभयारण्य एक साथ शामिल हैं।

तालिका 1: स्थलवार पर्यटक समीक्षाएँ (संख्या कोष्ठक में)

स्थल (राज्य)	कुल समीक्षाएँ	उत्कृष्ट	बहुत अच्छा	औसत	बुरा	बहुत बुरा
एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान (केरल)	1460	525	439	291	118	87
इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान (आंध्र प्रदेश)	190	60	84	38	8	0
दूधसागर जलप्रपात (गोवा)	1041	635	291	73	21	21
कोटिगाओ वन्यजीव अभयारण्य (गोवा)	24	4	8	8	3	1

भद्रा वन्यजीव अभयारण्य (कर्नाटक)	130	40	47	30	8	5
रणथंभौर, डेज़र्ट नेशनल पार्क, सोनार किला, अभयारण्य (राजस्थान)	185	52	65	44	15	9

स्रोत: ट्रिप एडवाइज़र इंडिया (अक्टूबर 2022 तक देखी गई प्रविष्टियाँ)

तालिका 2: सकारात्मक और नकारात्मक समीक्षाओं का हिस्सा (लेखकों की गणना)

स्थल	सकारात्मक (उत्कृष्ट + बहुत अच्छा)	नकारात्मक (बुरा + बहुत बुरा)
दूधसागर जलप्रपात (गोवा)	89.0%	4.0%
इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान (आंध्र प्रदेश)	75.8%	4.2%
भद्रा वन्यजीव अभयारण्य (कर्नाटक)	66.9%	10.0%
एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान (केरल)	66.0%	14.0%
राजस्थान के स्थल (समूह)	63.2%	13.0%
कोटिगाओ वन्यजीव अभयारण्य (गोवा)	50.0%	16.7%
कुल (3,030 समीक्षाएँ)	74.3%	9.8%

7.1 मुख्य अवलोकन

1. सबसे अधिक संतुष्टि दूधसागर में: यहाँ 61% पर्यटकों ने “उत्कृष्ट” रेटिंग दी और नकारात्मक समीक्षाएँ केवल 4% रहीं। पर्यटकों ने तैराकी क्षेत्र में लाइफ गार्ड और लाइफ जैकेट की उपलब्धता को सकारात्मक माना। मानसून में भारी बारिश के कारण सड़क तक पहुँचना कठिन हो जाता है।
2. केरल में अधिक समीक्षाएँ, पर नकारात्मक हिस्सा भी अधिक: एराविकुलम में 36% ने उत्कृष्ट रेटिंग दी, पर 14% समीक्षाएँ बुरी या बहुत बुरी रहीं। सर्वाधिक संख्या में पर्यटक आने पर सेवा और प्रबंधन की चुनौतियाँ भी बढ़ती हैं, ऐसा संकेत मिलता है।
3. राजस्थान का स्तर समूह-औसत से नीचे: राजस्थान के स्थलों में सकारात्मक हिस्सा 63.2% रहा, जो कुल औसत 74.3% से लगभग 11 प्रतिशत अंक कम है। नकारात्मक हिस्सा 13.0% है, जो औसत 9.8% से अधिक है। हालाँकि, इस समूह में अलग-अलग प्रकृति के कई स्थल मिलाए गए हैं, इसलिए इसे संकेत मात्र माना जाना चाहिए।
4. कोटिगाओ का छोटा नमूना: केवल 24 समीक्षाएँ होने से इसके प्रतिशत भरोसेमंद निष्कर्ष के लिए पर्याप्त नहीं हैं। फिर भी पर्यटकों ने वॉच टावर तक लंबी पैदल दूरी की ओर संकेत किया।
5. आंध्र प्रदेश: 75.8% सकारात्मक और 4.2% नकारात्मक समीक्षाएँ रहीं। पारिवारिक पिकनिक और बस जैसे साधनों से आसान पहुँच का उल्लेख हुआ। ध्यान रहे कि यह स्थल प्राणी उद्यान है, अतः इसे अन्य प्राकृतिक आवासों वाले स्थलों से सीधे तुलनीय नहीं माना जा सकता।

8. चर्चा: प्रबंधन की चुनौतियाँ

नीतिगत ढाँचे और स्थल-स्तर के अनुभव को साथ रखकर देखने पर कुछ चुनौतियाँ उभरती हैं।

- कानूनी अंतराल: इकोटूरिज़्म के लिए अलग कानून या अनिवार्य राष्ट्रीय दिशानिर्देश नहीं हैं। संचालन मुख्यतः वन्यजीव और वन संरक्षण कानूनों तथा वार्डन के निर्देशों पर निर्भर है।

- असमान प्रबंधन: रणथंभौर में ज़ोनिंग, वाहन नियमन और गाइड प्रशिक्षण जैसी व्यवस्थाएँ हैं, पर राजस्थान के सभी नए स्थलों पर ऐसी व्यवस्था विकसित होना अभी शेष है।
- जागरूकता की कमी: कई पर्यटक यह नहीं जानते कि गोवा जैसे पर्यटन-स्थलों में इको-गंतव्य भी हैं। इससे स्थलों की संभावना का पूरा उपयोग नहीं हो पाता।
- पहुँच और सुविधाएँ: मौसम में सड़क अवरोध, लंबी पैदल दूरी और बुनियादी सुविधाओं की कमी पर्यटक अनुभव को प्रभावित करती हैं।
- समन्वय: पर्यटन, वन, स्थानीय निकाय, टूर ऑपरेटर और समुदाय, सभी की भूमिकाएँ अलग हैं। इकोटूरिज्म की सफलता इनके आपसी तालमेल पर टिकी है।
- निगरानी: योजनाएँ बनाना पर्याप्त नहीं है; उनका क्रियान्वयन और प्रभावों की निरंतर निगरानी भी आवश्यक है।

9. सुझाव

1. इकोटूरिज्म के लिए अनिवार्य राष्ट्रीय दिशानिर्देश तैयार किए जाएँ, जिनमें आगंतुक संख्या, ज़ोनिंग और गाइड-प्रशिक्षण के न्यूनतम मानक हों।
2. रणथंभौर की ज़ोनिंग, वाहन-नियमन और गाइड-प्रशिक्षण जैसी प्रथाओं को राजस्थान के उदयपुर, जैसलमेर और जोधपुर के स्थलों में चरणबद्ध ढंग से अपनाया जाए।
3. मारेडुमिली मॉडल की तरह वन विभाग और स्थानीय समुदाय की साझेदारी से स्थलों का विकास हो, ताकि लाभ स्थानीय लोगों तक पहुँचे।
4. पर्यटक समीक्षाओं को नियमित फ़ीडबैक के रूप में उपयोग करने वाली व्यवस्था बने और नकारात्मक समीक्षाओं के कारणों का स्थल-वार अध्ययन हो।
5. पहुँच-मार्ग, सुरक्षा उपाय (जैसे लाइफ़ गार्ड) और बुनियादी सुविधाएँ मौसम को ध्यान में रखकर सुधारी जाएँ।
6. इको-गंतव्यों का वेबसाइट, ब्लॉग, टीवी और समाचार पत्रों के माध्यम से अधिक प्रचार किया जाए।

10. सीमाएँ

यह अध्ययन ऑनलाइन समीक्षाओं पर आधारित है, जो पर्यटकों की संतुष्टि दर्शाती हैं, पारिस्थितिक प्रभाव को नहीं। स्थलों के बीच समीक्षाओं की संख्या में बड़ा अंतर है (24 से 1,460 तक)। राजस्थान के स्थलों को एक समूह में रखा गया है। भविष्य के शोध में राजस्थान के स्थलों का अलग-अलग विश्लेषण और प्राथमिक सर्वेक्षण उपयोगी होगा।

11. निष्कर्ष

भारत में इकोटूरिज्म स्थलों की विविधता और लोकप्रियता बढ़ रही है, और गोवा, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा राजस्थान जैसे राज्य इसमें अग्रणी हैं। पर्यटक समीक्षाओं में कुल मिलाकर संतुष्टि का स्तर ऊँचा है (74.3% सकारात्मक), पर स्थलों के बीच अंतर स्पष्ट है। राजस्थान में प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों की संभावनाएँ बहुत हैं, लेकिन पर्यटक अनुभव समूह-औसत से कम रहा। अलग कानूनी ढाँचे, एकसमान प्रबंधन मानकों और समुदाय की भागीदारी से इकोटूरिज्म को अधिक टिकाऊ बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. Ministry of Tourism, Government of India (2022). Role and Functions of Ministry. tourism.gov.in/role-and-functions-ministry
2. Ministry of Tourism, Government of India (2019). Ecotourism. tourism.gov.in/ecotourism
3. Ministry of Environment, Forest and Climate Change (2022). moef.nic.in
4. Adak, B. (2022). Wildlife sanctuaries and national parks face restrictions as Indian government promotes eco-tourism. *Daily Mail India*.
5. Karnataka Ecotourism (2022). karnatakaecotourism.com
6. Andhra Pradesh Forest Development Corporation Ltd. (2022).
7. Goa Tourism Development Corporation (2022).
8. Trip Advisor India (2022). Rajamalai (Eravikulam) National Park; Dudhsagar Falls; Bhadra Wildlife Sanctuary; Kodaikanal Lake; Indira Gandhi Zoological Park. tripadvisor.in
9. Tsomoriri Wetland Conservation Reserve (2021). trponary.com
10. Newsome, D. and Hughes, M. (2021). Understanding the impacts of ecotourism.
11. Chand, S., Singh, S., Parappurathu, S., Roy, S.D. and Kumar, A. (2019). Explaining the status and scope of ecotourism development for livelihood security: Andaman and Nicobar Islands, India. *International Journal of Sustainable Development & World Ecology*.
12. Kumar, C. and Rao, P.S. (2021). Importance of Ecotourism towards Sustainable Tourism Development. *National Conference on Sustainable Development: Impact on Trade, Commerce*.